साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 3
March 2016

शारीर को आशक्ति और आत्मा को मुक्ति

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

संतों की हैं उक्ति
शारीर को चाहिए आशक्ति
और आत्मा को मुक्ति
जीवन वही होता जिसमे होती
इन सब चीजों की पूर्ति
बचपन में अनुरक्ति
जवानी में आशक्ति
बुढ़ापा में भक्ति
पर मिलता हैं उसे मुक्ति
जिसके जीवन में हो निस्वार्थ भक्ति
जो जग में रहकर न हो विरक्त
जीता हैं जीवन मानव मूल्यों के साथ
जग का यश अपयश जाता हैं उसी के साथ